

**Subject : Sanskrit, Semester : 1<sup>st</sup> & 3<sup>rd</sup>**

**Course : GENERIC ELECTIVE (GE-1) Course -1**

**GENERIC ELECTIVE (GE-2) Course -1**

**Paper : SANS-H-GE-T-1**

❖ **Describe the qualities of the king of Raghu dynasty according to the first canto of रघुवंशम्**

रघु वंशेशे प्रथम सर्ग अनुसरणे रघुवंशीय राजादेशे गुणवली वर्णना कर ।

**10**

उः महाकवि कालिदासेर अमर सृष्टि हल 'रघुवंशम्' महाकाव्ये । एइ महाकाव्ये प्रथम सर्गे रघु राजगणेशे गुणवली महाकवि सुललित भाषाय उपस्थापन करेछेन ।

रघुवंश अर्थात् सूर्य वंशेशे आदि पुरुष अर्थात् प्रथम राजा छिलेन सूर्यपुत्र मनु । सुतरात् वैवस्वत मनु थेके उत्पन्न पवित्र रघुवंशेशे राजारा छिलेन जन्म थेकेइ शुद्ध एवं सारा जीवन तारा शुद्धशील थाकतेन । फल ना पाओया पर्यन्त तारा कोनो काज मावपथे कोनोरूप बाधा विघ्नेर जन्य परित्याग करतेन ना । समुद्र पर्यन्त विशाल साम्राज्ये अधिपति हलेओ भोगविलासे रघुवंशीओ राजादेशे मन आकृष्ट हतो ना ।

स्वर्गेर देवराज इन्द्रेर सङ्गेओ तांदेशे सख्यता छिल,ताइ तादेशे रथेरे पथ केवलमात्र मर्तभूमिते सीमाबद्ध छिल ना, तादेशे रथेरे पथ स्वर्गलोक पर्यन्त विस्तृत छिल । तारा वेदेशे विधान मेने यथायथभावे अग्निते आहुति प्रदान करतेन एवं कामना अनुसारे प्रार्थीदेशे सन्तुष्ट करतेन । निजेदेशे कर्तव्य मेने करे अपराधीदेशे अपराधेरे गुरुत्व विवेचना करे यथायथ शान्ति प्रदान करतेन, तारा कखनोइ लघु पापे गुरुदण्ड वा गुरुपापे लघुदण्ड दितेन ना । तादेशे मध्ये कोनो प्रकार अलसता छिल ना, यथासमयेइ तांरा निद्रा त्याग करतेन एवं कर्मानुष्ठानेरे जन्य उद्यम देखातेन । तांरा मनेकरतेन प्रजापालनइ ऋत्रियेरे परम धर्म । प्रजादेशेके बेशि परिमाणे दान करवार जन्येइ तादेशे काछ थेके अन्न परिमाणे अर्थ संग्रह करे राज कोषागारे सङ्घित राखतेन, भोगविलासे व्यय करतेन ना । सत्येरे जन्य तारा मितभाषि थाकतेन । तारा केवलमात्र यशो लाभेरे उद्देश्येइ जयलाभेरे इच्छा करतेन, वंशेशे धारा अव्याहत राखार जन्य तारा पुत्र लाभेरे इच्छाय विवाह करतेन, इन्द्रिय भोगेरे जन्य नय । अतिथि वात्सल्य, नीति निष्ठता प्रभृति छिल एइ राजादेशे चारित्रिक भूषण ।

रघुवंशीय राजारा यथायथ आर्य धर्म अनुसारे शैशवे विद्याभास, यौवने विषय भोग, वार्धके मुनिवृत्ति अबलम्बन एवं जीवनेरे शेष भागे योगेरे द्वारा देहत्याग करतेन । एमनइ महा महिमामन्डित छिलेन महान रघु वंशेशे सुमहान-नृपतिवृन्द ।